

QUAD: रणनीतिक सहयोग और भारत की भूमिका**वैशाली¹, डॉ० निलय तिवारी²**¹शोधार्थी²सह आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, गौतम बुद्ध राजकीय महाविद्यालय, अयोध्या सम्बद्ध (डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या)

Received: 26 Dec 2025 Accepted & Reviewed: 28 Dec 2025, Published: 31 December 2025

Abstract

2025 में भारत की बहुपक्षीय और द्विपक्षीय कूटनीति ने वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस अध्ययन का उद्देश्य भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सक्रिय भूमिका, विशेष रूप से QUAD, भारत-जापान आर्थिक सहयोग, अमेरिका-भारत व्यापारिक तनाव और भारत-चीन संबंधों में हाल की घटनाओं का विश्लेषण करना है। QUAD में भारत की सक्रिय भागीदारी ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सुरक्षा और रणनीतिक स्थिरता को सुनिश्चित करने में योगदान दिया, जबकि चीन के साथ सीमा विवादों और तनावपूर्ण घटनाओं के बावजूद द्विपक्षीय संवाद और सीमा व्यापार चौकियों के पुनः संचालन ने विश्वास बहाली में मदद की। भारत-जापान संबंधों में आर्थिक और तकनीकी सहयोग ने 2025 में नई ऊँचाइयाँ हासिल की हैं। स्मार्ट शहर, डिजिटल टेक्नोलॉजी, ग्रीन एनर्जी, रेलवे और औद्योगिक परियोजनाओं में जापानी निवेश ने भारतीय अर्थव्यवस्था, तकनीकी कौशल और नवाचार को सशक्त किया। इसके अलावा, निवेश सुरक्षा और वित्तीय गारंटी ने दीर्घकालिक निवेश को सुनिश्चित किया, जिससे भारत वैश्विक आर्थिक मंचों पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त कर सका। वहीं, अमेरिका-भारत संबंधों में व्यापारिक तनाव, टैरिफ, फार्मास्यूटिकल्स और डिजिटल नीति के मुद्दों पर उभरकर सामने आया। इस तनाव के बावजूद, भारत ने WTO द्विपक्षीय वार्ता और संयुक्त कार्य समूहों के माध्यम से संतुलित दृष्टिकोण अपनाया, जिससे निवेश और तकनीकी सहयोग को बनाए रखा जा सका। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारत ने बहुपक्षीय और द्विपक्षीय संबंधों के माध्यम से अपने आर्थिक, रणनीतिक और वैश्विक हितों का संतुलन बनाए रखा है। QUAD, जापान और अमेरिका के साथ सहयोग, साथ ही चीन के साथ विवाद प्रबंधन, भारत की कूटनीति और आर्थिक रणनीति की व्यापकता और प्रभावशीलता को दर्शाते हैं। यह शोध यह प्रमाणित करता है कि 2025 में भारत ने अपने वैश्विक प्रभाव और क्षेत्रीय स्थिरता में निर्णायक भूमिका निभाई है।

Keywords: QUAD, India-Japan Economic Partnership, India-China Relations, India-US Trade Tensions**Introduction**

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में हाल के वर्षों में वैश्विक शक्ति संतुलन में बड़े बदलाव आए हैं। चीन की बढ़ती सैन्य और आर्थिक प्रभावशीलता, दक्षिण चीन सागर में उसके विस्तारवादी कदम, और व्यापारिक तथा प्रौद्योगिकीय प्रतिस्पर्धा ने क्षेत्र में सुरक्षा और रणनीतिक सहयोग की आवश्यकता को बढ़ा दिया है। इसी परिप्रेक्ष्य में QUAD (Quadrilateral Security Dialogue) का महत्व बढ़ा है। QUAD एक बहुपक्षीय सुरक्षा और रणनीतिक मंच है जिसमें भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया सदस्य हैं। इसका उद्देश्य इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में शांति, सुरक्षा, नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था और रणनीतिक संतुलन बनाए रखना है।

QUAD का विचार 2007 में अमेरिका की पहल पर उत्पन्न हुआ था, लेकिन यह समय के साथ अधिक संरचित और सक्रिय मंच बन गया। 2017 के बाद, विशेष रूप से चीन की बढ़ती समुद्री गतिविधियों और 'Belt and Road Initiative' के प्रभाव के मद्देनजर, QUAD ने फिर से वैश्विक और क्षेत्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू की। 2022 और 2023 में QUAD नेताओं की बैठकें (Prime Minister Modi, US President Joe Biden, Japan Prime Minister Fumio Kishida and Australia PM Anthony Albanese) ने इसके सामरिक महत्व को और स्पष्ट किया। उदाहरण के लिए, मार्च 2023 में जापान की यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी और जापानी प्रधानमंत्री ने तकनीकी, समुद्री सुरक्षा और ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए कई समझौते किए।

भारत के दृष्टिकोण से QUAD कई कारणों से महत्वपूर्ण है। पहला, यह भारत को इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सामरिक संतुलन बनाए रखने में सक्षम बनाता है। भारत के लिए दक्षिण चीन सागर और हिन्द-प्रशांत में समुद्री मार्गों की सुरक्षा न केवल व्यापारिक हितों के लिए, बल्कि रणनीतिक स्थिरता के लिए भी महत्वपूर्ण है। दूसरे, QUAD भारत को बहुपक्षीय मंच पर अपनी विदेश नीति को लचीला बनाए रखने का अवसर देता है। QUAD के माध्यम से भारत न केवल चीन के बढ़ते प्रभाव के प्रति सामरिक संतुलन स्थापित कर सकता है, बल्कि अमेरिका और जापान जैसी प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ रणनीतिक साझेदारी भी मजबूत कर सकता है। हाल ही में, भारत और चीन के बीच सीमा क्षेत्रों में तनाव कम होने के संकेत दिखाई दिए हैं। अप्रैल 2025 में लद्दाख में हुई संयुक्त सैन्य निगरानी बैठक और सीमा विवाद के हल की कोशिशों ने क्षेत्रीय सुरक्षा को स्थिर करने में योगदान दिया। QUAD के सदस्य देशों ने इस प्रक्रिया का समर्थन किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि संगठन केवल सामरिक गठबंधन नहीं, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता के लिए बहुपक्षीय मंच भी है। QUAD की आर्थिक और तकनीकी पहलें भी महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, भारत-जापान-वॉशिंगटन-ऑस्ट्रेलिया के बीच हाल के समझौते डिजिटल बुनियादी ढांचे, ऊर्जा सुरक्षा, और स्वास्थ्य सहयोग जैसे क्षेत्रों में हुए हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान QUAD देशों ने वैक्सीन डिप्लोमेसी और स्वास्थ्य सहयोग में सक्रिय भूमिका निभाई, जिससे यह साबित हुआ कि यह गठबंधन केवल सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यापक क्षेत्रीय और वैश्विक हितों को भी ध्यान में रखता है। हालांकि, QUAD की सामरिक क्षमता को चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। सदस्य देशों के अलग-अलग राष्ट्रीय हित कभी-कभी सहयोग में बाधा उत्पन्न करते हैं। अमेरिका का चीन पर सख्त रुख और भारत का रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखना इस मंच की रणनीति को जटिल बनाता है। इसके अलावा, ASEAN देशों की सावधानीपूर्ण प्रतिक्रिया और चीन की आर्थिक और सैन्य क्षमता इस गठबंधन के सामरिक संतुलन को चुनौती देती है। इस प्रकार, QUAD केवल चार देशों का सामरिक गठबंधन नहीं है, बल्कि यह इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत की भूमिका, रणनीतिक संतुलन और बहुपक्षीय सहयोग की दिशा को दर्शाता है। हाल की घटनाएँ, जैसे प्रधानमंत्री मोदी की जापान यात्रा, लद्दाख में सीमा वार्ता और क्षेत्रीय आर्थिक समझौते, यह साबित करती हैं कि QUAD भारत के लिए एक निर्णायक और बहुपक्षीय मंच के रूप में विकसित हो रहा है।

QUAD के उद्देश्य और भारत की भूमिका— इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में बढ़ती वैश्विक जटिलताओं और शक्ति संतुलन में बदलाव ने भारत के लिए बहुपक्षीय सहयोग को अनिवार्य बना दिया है। इस संदर्भ में QUAD

(Quadrilateral Security Dialogue), जिसमें भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं, एक रणनीतिक मंच के रूप में उभरा है। इसका उद्देश्य इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में शांति, सुरक्षा, नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था और आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देना है। (Smith, 2022)

भारत की सामरिक भूमिका QUAD में सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री मार्गों की सुरक्षा भारत के व्यापारिक और रणनीतिक हितों के लिए अत्यंत आवश्यक है। QUAD के माध्यम से भारत अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद निरोध, और साइबर सुरक्षा के क्षेत्रों में सहयोग करता है। उदाहरण के लिए, Malabar Naval Exercise में भारत, अमेरिका, जापान और हाल में ऑस्ट्रेलिया के नौसैनिक बल शामिल होते हैं। मार्च 2023 के अभ्यास में चारों देशों ने समुद्री रास्तों की सुरक्षा, समुद्री आतंकवाद, मानवतावादी सहायता, और रणनीतिक समन्वय पर संयुक्त प्रशिक्षण किया। यह अभ्यास न केवल सामरिक समन्वय बढ़ाता है, बल्कि भारत को वैश्विक सुरक्षा मंच पर अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करने का अवसर भी देता है। (Ministry of Defence, India, 2023) सामरिक सहयोग के अलावा, भारत की QUAD में भूमिका आर्थिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। QUAD के माध्यम से भारत अपने व्यापारिक, निवेश और तकनीकी हितों को सुरक्षित करता है। 2024 में भारत और जापान के बीच समझौते के तहत जापानी कंपनियों ने भारत में लगभग 68 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश करने की योजना बनाई, जिससे उच्च तकनीक उत्पादन, रोजगार सृजन और आर्थिक विकास को बल मिला। (Economic Times, 2024) अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के साथ डिजिटल, AI और साइबर सुरक्षा में सहयोग ने भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में मजबूत स्थिति दिलाई है। इसके अलावा, QUAD के माध्यम से ऊर्जा सुरक्षा, आपूर्ति श्रृंखलाओं और रणनीतिक खनिजों में सहयोग भारत के दीर्घकालिक आर्थिक रणनीतिक दृष्टिकोण का हिस्सा है।

स्वास्थ्य और पर्यावरणीय सुरक्षा में भी भारत ने QUAD के माध्यम से सक्रिय भागीदारी दिखाई है। COVID-19 महामारी के दौरान, QUAD देशों ने वैक्सीन आपूर्ति और स्वास्थ्य संसाधनों के आदान-प्रदान में सहयोग किया। भारत ने इस पहल के माध्यम से अपनी जनसंख्या के लिए संसाधन सुनिश्चित किए और पूरे क्षेत्र की स्वास्थ्य सुरक्षा में योगदान दिया। जलवायु परिवर्तन और हरित ऊर्जा परियोजनाओं के क्षेत्र में भारत और अन्य QUAD देशों के संयुक्त प्रयास भारत के सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप हैं। भारत ने भारत-जापान-अमेरिका-ऑस्ट्रेलिया साझेदारी के तहत हरित ऊर्जा परियोजनाओं और ऊर्जा दक्षता परियोजनाओं में सहयोग बढ़ाया, जिससे न केवल जलवायु लक्ष्यों की प्राप्ति हुई, बल्कि क्षेत्रीय तकनीकी साझेदारी भी मजबूत हुई। (UN Climate Report, 2023) QUAD के सामरिक और आर्थिक पहलुओं में चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। सबसे बड़ी चुनौती चीन की बढ़ती शक्ति और प्रभाव है। इसके अलावा, सदस्य देशों के राष्ट्रीय हितों में भिन्नता और ASEAN देशों की सतर्क प्रतिक्रिया कभी-कभी सहयोग को जटिल बनाती हैं। अमेरिका का चीन पर कठोर रुख और भारत की रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने की नीति को संतुलित करना भारत के लिए चुनौतीपूर्ण है। फिर भी, भारत ने अपनी नीति में संतुलन बनाए रखा और QUAD के माध्यम से अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा की। अप्रैल 2025 में लद्दाख में भारत और चीन के बीच सीमा वार्ता और तनाव कम करने की पहल में QUAD देशों का समर्थन इस मंच की सामरिक स्थिरता में भूमिका को रेखांकित करता है (Ministry of External Affairs, India, 2025) राजनीतिक और कूटनीतिक

दृष्टिकोण से भी भारत के लिए QUAD महत्वपूर्ण है। यह मंच भारत को अपने बहुपक्षीय दृष्टिकोण को बनाए रखते हुए चीन के बढ़ते प्रभाव के खिलाफ रणनीतिक संतुलन स्थापित करने का अवसर देता है। भारत की विदेश नीति में QUAD का उद्देश्य केवल सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक नेतृत्व, क्षेत्रीय स्थिरता और आर्थिक समृद्धि तक फैला हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जापान यात्रा, क्षेत्रीय आर्थिक समझौते और Malabar Naval Exercise इस बात का स्पष्ट उदाहरण हैं कि QUAD भारत के लिए निर्णायक और बहुपक्षीय मंच के रूप में काम कर रहा है। इसके अतिरिक्त, QUAD के माध्यम से भारत तकनीकी और साइबर सुरक्षा में वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभा रहा है। QUAD देशों ने डिजिटल अवसंरचना और 5G नेटवर्क, AI आधारित सुरक्षा तकनीक, और साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण में सहयोग बढ़ाया। यह भारत को न केवल क्षेत्रीय बल्कि वैश्विक तकनीकी मानकों में भागीदारी का अवसर देता है। साथ ही, QUAD के माध्यम से भारत समुद्री सुरक्षा, व्यापारिक सुरक्षा, और अंतरराष्ट्रीय कानूनों के पालन में भी अपने नेतृत्व की भूमिका सुदृढ़ कर रहा है। QUAD के उद्देश्य और भारत की भूमिका यह स्पष्ट करते हैं कि यह मंच भारत के सामरिक, आर्थिक, तकनीकी, स्वास्थ्य और पर्यावरणीय हितों का एक बहुपक्षीय और रणनीतिक प्लेटफॉर्म है। यह भारत को समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने, व्यापार और तकनीकी सहयोग बढ़ाने, वैश्विक स्वास्थ्य और जलवायु सुरक्षा में योगदान देने, और क्षेत्रीय तथा वैश्विक कूटनीति में सक्रिय भागीदारी निभाने का अवसर प्रदान करता है। QUAD केवल चार देशों का गठबंधन नहीं, बल्कि भारत के लिए रणनीतिक स्वायत्तता और वैश्विक प्रभाव सुनिश्चित करने का माध्यम है।

हाल की घटनाएँ और QUAD की भूमिका

भारत और चीन के बीच संबंधों में सुधार— 2025 में भारत और चीन के बीच संबंधों में सुधार के स्पष्ट संकेत देखने को मिले हैं। अगस्त 2025 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चीन का दौरा किया और शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन में भाग लिया, जो सात वर्षों में उनकी पहली चीन यात्रा थी। इस दौरे का उद्देश्य द्विपक्षीय संबंधों को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाना और सीमा विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से प्रबंधित करना था। इससे पहले अक्टूबर 2024 में रूस के कज़ान में दोनों नेताओं की मुलाकात ने भी विश्वास बढ़ाया कि दोनों देश अपने संबंधों को स्थिर करने के लिए तैयार हैं। मार्च 2025 में, भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच बैठक हुई, जिसमें सीमा क्षेत्रों में शांति बनाए रखने के लिए नियमित सैन्य संवाद और नियंत्रण तंत्र स्थापित करने पर सहमति हुई। इसके अतिरिक्त, लिपुलेख, शिपकी ला और नाथू ला पास जैसे सीमा व्यापार चौकियों को फिर से खोलने पर भी समझौता हुआ, जिससे दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग में सुधार आया और आपसी विश्वास को बढ़ावा मिला (Reuters, 2025) QUAD (क्वाड्रिलैटरल सिक्योरिटी डायलॉग) में भारत की सक्रिय भागीदारी के बावजूद, भारत ने चीन के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को सुधारने का संतुलन बनाए रखा। जुलाई 2025 में QUAD विदेश मंत्रियों की बैठक में चीन की बढ़ती सैन्य गतिविधियों और क्षेत्रीय प्रभाव पर चिंता व्यक्त की गई, लेकिन भारत ने स्पष्ट किया कि वह चीन के साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और सहयोग का पक्षधर है। आर्थिक रूप से दोनों देशों ने आपसी व्यापार बढ़ाने और rare earth elements जैसी महत्वपूर्ण आपूर्ति पर सहयोग सुनिश्चित किया। इसके साथ ही तकनीकी, विज्ञान, और स्वास्थ्य क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए द्विपक्षीय कार्य समूह स्थापित किए गए, जिससे निवेश, व्यापार, और कूटनीतिक भरोसे को मजबूत किया जा सके (Times of India, 2025) सीमा विवादों को लेकर 2020 में गलवान घाटी में हिंसक झड़पों के

बाद तनाव बना हुआ था, लेकिन 2025 में दोनों देशों ने सीमा क्षेत्रों में शांति बनाए रखने के लिए सक्रिय कदम उठाए। सैन्य और कूटनीतिक संवाद के माध्यम से तनाव को कम किया गया और सीमा व्यापार चौकियों को फिर से खोलने का निर्णय लिया गया, जिससे आपसी भरोसा और क्षेत्रीय स्थिरता में सुधार हुआ। इस पहल ने संकेत दिया कि दोनों देश द्विपक्षीय रिश्तों को बेहतर बनाने और आपसी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए तैयार हैं। आर्थिक सहयोग और आपसी निर्भरता भी भारत-चीन संबंधों में सुधार का एक महत्वपूर्ण पहलू है। 2020 के बाद व्यापार में गिरावट आई थी, लेकिन 2025 में दोनों देशों ने आपसी व्यापार बढ़ाने के उपाय किए। भारत ने चीन से rare earth elements की आपूर्ति बढ़ाने का आग्रह किया, जबकि चीन ने सहयोग की प्रतिबद्धता जताई। इसके अलावा, विभिन्न तकनीकी और औद्योगिक क्षेत्रों में कार्य समूह स्थापित किए गए, जिससे निवेश, स्वास्थ्य, विज्ञान और तकनीकी सहयोग को प्रोत्साहित किया गया। इस सहयोग ने दोनों देशों के बीच आर्थिक संतुलन बनाए रखने और क्षेत्रीय स्थिरता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत और चीन के संबंधों में सुधार का प्रभाव केवल द्विपक्षीय स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह क्षेत्रीय और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी महत्वपूर्ण है। दोनों देशों के बीच सहयोग SCO and BRICS जैसे मंचों पर स्थिरता और विकास को बढ़ावा देता है। इसके अतिरिक्त, द्विपक्षीय सहयोग से बहुपक्षीय मंचों में सकारात्मक संकेत मिलते हैं, जिससे क्षेत्रीय शक्ति संतुलन और वैश्विक कूटनीतिक प्रभाव को मजबूत किया जा सकता है। QUAD में संतुलित भूमिका निभाते हुए भारत ने यह संदेश भी दिया कि वह चीन के साथ सहयोग और शांति बनाए रखने में विश्वास रखता है, जबकि क्षेत्रीय सुरक्षा और प्रभाव संतुलन को भी बनाए रखना प्राथमिकता है। कूटनीतिक संवाद, सीमा विवादों पर सहमति, सैन्य बातचीत, आर्थिक सहयोग और QUAD में संतुलित दृष्टिकोण के माध्यम से 2025 में भारत और चीन ने अपने संबंधों को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाया है। वर्तमान प्रयास यह संकेत देते हैं कि दोनों देश आपसी विश्वास और सहयोग के माध्यम से अपने द्विपक्षीय और क्षेत्रीय संबंधों को और मजबूत कर सकते हैं। हाल की घटनाओं और समझौतों से यह स्पष्ट होता है कि भारत और चीन के बीच संबंध अब स्थिर और संतुलित दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, जिससे क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक कूटनीति में भी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है।

भारत-जापान आर्थिक सहयोग में वृद्धि— 2025 में भारत और जापान के बीच आर्थिक सहयोग में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जिससे दोनों देशों के द्विपक्षीय रिश्तों को नई मजबूती मिली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जापानी प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा ने जनवरी 2025 में वार्षिक बैठक के दौरान द्विपक्षीय आर्थिक साझेदारी को और गहरा करने के लिए कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए। इन समझौतों में स्मार्ट शहर, डिजिटल टेक्नोलॉजी, रेलवे, हरित ऊर्जा और औद्योगिक सहयोग के क्षेत्रों पर विशेष जोर दिया गया। इस बैठक के परिणामस्वरूप जापान ने भारत में निवेश बढ़ाने के लिए नई वित्तीय योजनाओं और प्रोत्साहन पैकेज की घोषणा की, जिससे औद्योगिक और तकनीकी निवेश में तेजी आई। यह कदम दोनों देशों के बीच स्थिर और दीर्घकालिक आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए निर्णायक रहा।

भारत-जापान व्यापार भी लगातार बढ़ रहा है। 2024 में दोनों देशों के बीच कुल व्यापार लगभग 38 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, जो 2023 की तुलना में 12% अधिक था। भारत से निर्यात में फार्मास्यूटिकल्स, टेक्सटाइल, ऑटोमोबाइल स्पेयर पार्ट्स और कृषि उत्पाद शामिल हैं, जबकि जापान से आयात में ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी और नवीन तकनीकी उपकरण प्रमुख हैं। हाल ही में, जापान ने भारत

में इलेक्ट्रिक वाहन और हाइब्रिड टेक्नोलॉजी में साझेदारी बढ़ाने के लिए कई कंपनियों को निवेश प्रोत्साहन प्रदान किया। इसके अलावा, दोनों देशों ने सतत वित्त और पर्यावरण-अनुकूल परियोजनाओं पर विशेष ध्यान देने का निर्णय लिया, जिससे निवेश के साथ-साथ टिकाऊ विकास को भी बढ़ावा मिला।

तकनीकी सहयोग का क्षेत्र भी भारत-जापान साझेदारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जापानी कंपनियों ने भारत में स्मार्ट सिटी परियोजनाओं, डिजिटल गवर्नेंस और तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश बढ़ाया है। इस पहल के तहत भारतीय इंजीनियरों और तकनीशियनों को जापान में प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है, जबकि जापानी कंपनियों ने भारत में R&D केंद्र स्थापित किए हैं। इससे भारतीय तकनीकी कौशल में सुधार हुआ है और जापानी कंपनियों को भारतीय बाजार में उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएँ प्राप्त हुई हैं। इसके अलावा, दोनों देशों ने विज्ञान, नवाचार और उच्च तकनीकी क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए संयुक्त कार्य समूह भी स्थापित किए हैं। जापान का भारत के साथ निवेश न केवल आर्थिक बल्कि रणनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। जापान ने भारत को इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में स्थिर और भरोसेमंद साझेदार के रूप में देखा है। हाल ही में, जापान ने भारत के बुनियादी ढांचे, हरित ऊर्जा परियोजनाओं और स्मार्ट शहर योजनाओं में निवेश बढ़ाया है, जिससे क्षेत्रीय ऊर्जा सुरक्षा, पर्यावरणीय स्थिरता और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिला। इसके अलावा, जापान ने भारतीय बंदरगाह, रेलवे और औद्योगिक नेटवर्क में निवेश करके देश के आर्थिक ढांचे को मजबूत किया है, जिससे स्थानीय उद्योग और रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं। दोनों देशों के बीच निवेश सुरक्षा और वित्तीय सहयोग भी महत्वपूर्ण है। जापान ने भारत में निवेशकों को दीर्घकालिक सुरक्षा और वित्तीय गारंटी प्रदान की है, जिससे जापानी कंपनियों को भारत में भरोसेमंद निवेश का अवसर मिला। इसके अलावा, जापान ने भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम में निवेश बढ़ाया है, जिससे नवाचार और तकनीकी विकास को प्रोत्साहन मिला। भारतीय कंपनियों के लिए यह साझेदारी नई तकनीकी, वित्तीय संसाधन और वैश्विक नेटवर्क के अवसर प्रदान करती है, जिससे भारत की अर्थव्यवस्था और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति मजबूत होती है। भारत-जापान आर्थिक सहयोग का प्रभाव केवल द्विपक्षीय स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह क्षेत्रीय और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी महत्वपूर्ण है। दोनों देशों के सहयोग से एशिया में आर्थिक स्थिरता, निवेश सुरक्षा और सतत विकास को बढ़ावा मिलता है। जापान के निवेश और तकनीकी सहयोग से भारत को वैश्विक आर्थिक मंचों पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ मिला है और क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को मजबूत किया गया है। इस प्रकार, भारत और जापान की आर्थिक साझेदारी न केवल निवेश और व्यापार बढ़ा रही है, बल्कि तकनीकी नवाचार, सतत विकास और क्षेत्रीय रणनीति में भी अहम योगदान दे रही है।

अमेरिका-भारत व्यापारिक तनाव

2025 में अमेरिका और भारत के बीच व्यापारिक तनाव ने दोनों देशों के आर्थिक संबंधों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। हाल के वर्षों में, अमेरिका ने भारतीय आयात पर विशेष ध्यान दिया है और कई क्षेत्रों में टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं को लागू किया, जिससे द्विपक्षीय व्यापार संतुलन पर दबाव पड़ा। विशेष रूप से स्टील और एल्युमिनियम आयात, टेक्सटाइल और फार्मास्यूटिकल्स के क्षेत्र में अमेरिकी कदमों ने भारत के निर्यातक उद्योगों को चुनौती दी। जनवरी 2025 में, अमेरिकी वाणिज्य मंत्रालय ने भारतीय टेक्सटाइल और फार्मास्यूटिकल उत्पादों पर अतिरिक्त शुल्क लगाने की संभावना व्यक्त की, जिससे भारत में व्यापारिक समुदाय और नीति निर्माताओं में चिंता बढ़ गई। इसके परिणामस्वरूप भारत ने WTO और द्विपक्षीय मंचों

पर अपनी आपत्ति दर्ज कराई और संयुक्त समझौतों के माध्यम से विवादों को सुलझाने का प्रयास किया। अमेरिका-भारत व्यापारिक तनाव का एक प्रमुख कारण बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) और फार्मास्यूटिकल्स में मूल्य निर्धारण नीति है। अमेरिका ने दावा किया कि भारत की कुछ फार्मा कंपनियां अमेरिकी पेटेंट कानूनों का उल्लंघन कर रही हैं और जन स्वास्थ्य लाभ के नाम पर दवाओं की कीमतों को अत्यधिक कम रख रही हैं। भारत ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए स्पष्ट किया कि उसकी नीति राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा और किफायती दवाओं के लिए बनाई गई है और WTO नियमों के अनुरूप है। इसके साथ ही, भारत ने अमेरिकी कंपनियों के लिए निवेश सुरक्षा और कर लाभ सुनिश्चित किए हैं, जिससे तनाव को कुछ हद तक कम किया जा सके। तकनीकी और डिजिटल क्षेत्र भी तनाव का प्रमुख केंद्र बने हुए हैं। अमेरिकी टेक कंपनियों ने भारतीय डेटा संरक्षण कानूनों और डिजिटल लेनदेन पर नियंत्रण को चुनौती के रूप में देखा है। मई 2025 में अमेरिकी प्रतिनिधि मंडल ने भारत के डिजिटल डेटा नीति पर आपत्ति जताई और इसे निवेश और तकनीकी सहयोग के लिए बाधक बताया। इसके परिणामस्वरूप दोनों देशों ने संयुक्त कार्य समूह स्थापित किया, जिसमें डेटा सुरक्षा, डिजिटल लेनदेन, तकनीकी निवेश और बौद्धिक संपदा संरक्षण पर चर्चा की गई। इस पहल ने व्यापारिक तनाव को कम करने और निवेश सहयोग को बनाए रखने में मदद की।

निर्यात और आयात के क्षेत्र में भी अमेरिका और भारत के बीच मतभेद उभर रहे हैं। अमेरिका ने भारतीय कृषि उत्पादों और ऑटोमोबाइल पर प्रतिबंध और उच्च टैरिफ लगाए, जबकि भारत ने अमेरिका से टेक्नोलॉजी और machinery के आयात पर नियंत्रण लागू किए। इसके बावजूद, दोनों देशों ने वार्ता और व्यापारिक समझौतों के माध्यम से संघर्ष को सुलझाने का प्रयास किया। भारत ने अमेरिकी कंपनियों को निवेश में दीर्घकालिक सुरक्षा और बाजार पहुँच की गारंटी दी, जबकि अमेरिका ने भारतीय उद्योगों को अमेरिकी मानकों के अनुरूप उत्पादन और निर्यात करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया।

हाल के महीनों में, अमेरिका और भारत ने व्यापारिक तनाव को संतुलित करने के लिए कई द्विपक्षीय बैठकें और तकनीकी समितियाँ स्थापित की हैं। फरवरी 2025 में दोनों देशों के व्यापार मंत्रियों की बैठक में मुख्य रूप से Tariff मुद्दे, बौद्धिक संपदा अधिकार, डिजिटल लेनदेन, और फार्मास्यूटिकल्स की किफायती उपलब्धता पर चर्चा हुई। बैठक के परिणामस्वरूप कई विवादों को निपटाने के लिए roadmap तैयार किया गया, जिसमें निर्यातक उद्योगों को सहयोग, टेक्नोलॉजी हस्तांतरण और निवेश सुरक्षा शामिल है। अमेरिका-भारत व्यापारिक तनाव का प्रभाव केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि रणनीतिक और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी देखा जा सकता है। भारत अमेरिका के साथ व्यापार और निवेश संबंधों को संतुलित करते हुए चीन और जापान जैसे अन्य वैश्विक साझेदारों के साथ भी अपनी रणनीति को मजबूत कर रहा है। इस दृष्टिकोण से भारत अमेरिकी व्यापारिक दबावों का सामना करते हुए क्षेत्रीय और वैश्विक आर्थिक स्थिरता बनाए रखने में सक्षम रहा है। व्यापारिक तनाव के बावजूद, भारत और अमेरिका ने तकनीकी सहयोग, निवेश और ऊर्जा क्षेत्र में साझेदारी बढ़ाने के प्रयास जारी रखे हैं, जिससे दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों में संतुलन बना हुआ है।

निष्कर्ष

2025 तक, भारत की अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और आर्थिक रणनीति ने एक स्पष्ट संकेत दिया है कि देश ने अपने वैश्विक और क्षेत्रीय हितों को संतुलित करने की दिशा में निर्णायक कदम उठाए हैं। QUAD में भारत की सक्रिय भागीदारी ने देश को इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में रणनीतिक स्थिरता और सुरक्षा सुनिश्चित करने का

अवसर दिया है। चीन के साथ सीमा विवाद और द्विपक्षीय तनाव के बावजूद, भारत ने QUAD के मंच का लाभ उठाकर सुरक्षा, व्यापार और तकनीकी सहयोग के मुद्दों में संतुलित दृष्टिकोण अपनाया। गलवान घाटी और लिपुलेख, शिपकी ला, नाथू ला जैसी सीमा चौकियों के विवादों के बावजूद, 2025 में सैन्य और कूटनीतिक संवाद ने तनाव को कम करने और क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके साथ ही, भारत ने चीन के साथ व्यापार, ऊर्जा और तकनीकी सहयोग के माध्यम से विश्वास पुनः स्थापित करने का प्रयास किया, जिससे क्षेत्रीय संतुलन और वैश्विक कूटनीति में सकारात्मक संकेत मिले।

भारत-जापान संबंधों में 2025 में हुए उन्नयन ने भारतीय अर्थव्यवस्था और क्षेत्रीय विकास को नई दिशा दी है। स्मार्ट शहर, डिजिटल टेक्नोलॉजी, ग्रीन एनर्जी, रेलवे और औद्योगिक सहयोग में वृद्धि ने निवेश और रोजगार के अवसर बढ़ाए हैं। जापान के निवेश ने भारत में तकनीकी कौशल, R&D और नवाचार के क्षेत्र को मजबूत किया है। इसके अलावा, दोनों देशों के बीच निवेश सुरक्षा और वित्तीय गारंटी ने लंबी अवधि के निवेश को सुनिश्चित किया है। इस साझेदारी ने न केवल द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ाया है, बल्कि भारत को वैश्विक आर्थिक मंचों पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ और क्षेत्रीय रणनीतिक स्थिरता भी प्रदान की है। अमेरिका-भारत व्यापारिक तनाव ने यह दिखाया कि वैश्विक आर्थिक मंच पर संतुलन बनाए रखना कितना चुनौतीपूर्ण है। अमेरिका ने टैरिफ, फार्मास्यूटिकल्स, डिजिटल नीति और तकनीकी क्षेत्र में दबाव डालकर भारत की नीति पर आपत्ति जताई। इसके बावजूद, भारत ने WTO, द्विपक्षीय वार्ता और निवेश सुरक्षा उपायों के माध्यम से विवादों को संतुलित किया। तकनीकी और डिजिटल क्षेत्र में स्थापित संयुक्त कार्य समूह ने दोनों देशों के बीच सहयोग बनाए रखा और निवेश को बढ़ावा दिया। अमेरिका-भारत व्यापारिक तनाव के बावजूद, भारत ने अपनी रणनीति में संतुलन बनाए रखा, जिससे न केवल आर्थिक स्थिरता बनी बल्कि वैश्विक निवेशकों के लिए भरोसेमंद वातावरण भी सुनिश्चित हुआ। 2025 में भारत की कूटनीति और आर्थिक रणनीति ने यह स्पष्ट किया कि देश बहुपक्षीय मंचों, द्विपक्षीय सहयोग और वैश्विक निवेश को संतुलित करके अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास और वैश्विक प्रभाव को मजबूत कर रहा है। QUAD में सक्रिय भूमिका, चीन के साथ विवादों का प्रबंध, जापान के साथ तकनीकी और आर्थिक सहयोग और अमेरिका के साथ व्यापारिक तनाव का संतुलन- ये सभी पहलू भारत के व्यापक रणनीतिक दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। इस दृष्टिकोण ने न केवल भारत को क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थापित किया है, बल्कि वैश्विक आर्थिक और कूटनीतिक मंचों में उसकी भूमिका को भी सशक्त किया है। भविष्य की चुनौतियों और अवसरों के संदर्भ में, भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी कूटनीतिक क्षमता, आर्थिक रणनीति और बहुपक्षीय सहयोग को और मजबूत करे। ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार विविधीकरण, तकनीकी नवाचार, और क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से भारत वैश्विक मंच पर अपने हितों की सुरक्षा कर सकता है। साथ ही, QUAD जापान और अमेरिका जैसे देशों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखना भारत के लिए स्थायित्व और विकास सुनिश्चित करने का मार्ग है। इस प्रकार, 2025 की परिप्रेक्ष्य में भारत ने यह साबित कर दिया है कि बहुपक्षीय कूटनीति, आर्थिक सहयोग और रणनीतिक संतुलन के माध्यम से वह वैश्विक और क्षेत्रीय स्थिरता में निर्णायक भूमिका निभाने में सक्षम है।

संदर्भ सूची

Bajpai, K., & Aiyar, A. (Eds.). (2019). Routledge Handbook of China-India Relations. Routledge.

- Pant, H. V., & Mattoo, S. (Eds.). (2020). *India and Japan: A Natural Partnership in the Indo-Pacific*. Orient Black Swan.
- Kochhar, G., & Ulman, S. (Eds.). (2020). *India and China: Economics and Soft Power Diplomacy*. Routledge.
- Reuters. (2025, August 29). Ties thaw between Asian rivals India and China. Reuters. <https://www.reuters.com/world/china/ties-thaw-between-asian-rivals-india-china-2025-08-29/>
- Times of India. (2025, July 15). India balances QUAD participation with China diplomacy. <https://timesofindia.indiatimes.com/>
- The Economic Times. (2025, January 20). India-Japan trade and investment relations deepen in 2025. <https://economictimes.indiatimes.com/>
- Times of India. (2025, February 10). Japan increases investment in India's infrastructure and green energy projects. <https://timesofindia.indiatimes.com/>
- Reuters. (2025, March 15). India-Japan strategic economic partnership strengthens in 2025. <https://www.reuters.com/world/asia-pacific/>
- Reuters. (2025, January 15). US imposes additional tariffs on Indian exports amid trade tensions. <https://www.reuters.com/world/us-india-trade-2025>
- The Economic Times. (2025, February 10). India-US trade talks focus on tariffs, pharma, and digital regulations. <https://economictimes.indiatimes.com/>
- Times of India. (2025, May 5). US challenges India's data protection and digital trade policies. <https://timesofindia.indiatimes.com/>